निर्जला एकादशी व्रत कथा (Nirjala Ekadashi Vrat Katha)

भीमसेन, पांडवों में से एक, बहुत भोजन करने वाले थे। वे कठिन तप और व्रत का पालन करने में असमर्थ थे, विशेष रूप से एकादशी के व्रत में। भीम ने अपने भाइयों और माता कुंती को एकादशी व्रत करते देखा, लेकिन स्वयं को यह कठिन कार्य नहीं कर सका। भीम को इस बारे में बहुत दुःख था कि वह भगवान विष्णु का उचित सम्मान नहीं कर पा रहे थे।

एक दिन भीम ने महर्षि व्यास से अपनी समस्या बताई। महर्षि व्यास ने भीम को एक उपाय सुझाया। उन्होंने बताया कि यदि भीम निर्जला एकादशी का व्रत रखेंगे, तो उन्हें सभी एकादशियों का पुण्य प्राप्त होगा। निर्जला एकादशी ज्येष्ठ मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी को आती है, जिसमें बिना जल के पूरे दिन उपवास करना होता है। यह व्रत कठिन है, लेकिन इसका फल बहुत अधिक है। महर्षि व्यास की सलाह पर भीम ने निर्जला एकादशी का व्रत रखने का संकल्प लिया। उन्होंने बिना जल और भोजन के पूरे दिन उपवास रखा। भीम के इस कठोर व्रत से भगवान विष्णु अत्यंत प्रसन्न हुए और उन्हें आशीर्वाद दिया। इस व्रत के प्रभाव से भीम को सभी एकादशियों का पुण्य प्राप्त हुआ।

इस प्रकार, निर्जला एकादशी (Nirjala Ekadashi) का व्रत अत्यधिक महत्व रखता है और इसे रखने वाले को सभी एकादशियों का फल प्राप्त होता है। इस व्रत का पालन करने से व्यक्ति पापों से मुक्त होता है और मोक्ष की प्राप्ति होती है। व्रत की कठिनाई के बावजूद, इसकी महिमा और पुण्य अत्यधिक होते हैं, इसलिए इसे 'भीमसेनी एकादशी' भी कहा जाता है।

www.janbhakti.in